तपस्या

मन मेरा रहा मचल कहता जल्दी यहाँ से चल।
जाकर पावन धाम में खुद को ले पूरा ही बदल।
गुणों की खुशबू फैला जैसे महकता है चन्दन।
गुण मूरत आत्मा को ही करते हैं सब वन्दन।
बनकर पूर्ण पावन तूँ बना ले अपनी पहचान।
तन मन की पवित्रता ही बन जाए तेरी शान।
बाबा की याद से भर ले खुद में योग का बल।
आए माया सामने तो बिखरे जैसे ताश महल।
अपने अंदर खो जा और खुद को तूँ निखार।
अपने जीवन से सारी व्यर्थ की बातें बिसार।
बाबा की याद से आएगी जीवन में खुशहाली।
योगबल से पा ले शुद्ध संकल्पों की हरियाली।
पाया है किसको तूने ये तो ज़रा सोचकर देख।
श्रीमत से तूँ लिख ले अपने ही भाग्य का लेख।

ॐ शांति